Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue No. IX, January-2013, ISSN 2230-7540

दतिया रियासत के सामाजिक क्षेत्र का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue No. IX, January-2013, ISSN 2230-7540

दतिया रियासत के सामाजिक क्षेत्र का अध्ययन

Rajendra Kumar Khare[1]* Dr. Ram Avataar Sharma[2]

[1] Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

[2] Professor, Department of History, Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh

सार – *दतिया रियासत में संस्कृति की महानता एवं सर्वोच्चता उसकी प्राचीनता, स्थिरता और विविधता में निहित है। दतिया रियासत की संस्कृति को विविधता का मिश्रण कहा जाता है, इसका कारण यहां विभिन्न धार्मिक, जातीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समूहों की मौजूदगी है। इन विभिन्न समूहों में से कोई न कोई प्राचीन सांस्कृतिक विशेषताओं को अपनाये हुए हैं। देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न जातीय एवं धार्मिक समूहों ने अपनी-अपनी संस्कृतियों को जन्म दिया तथा एक दूसरे के प्रभाव से अपने को बनाये रखा। विभिन्न सांस्कृतिक समूह एक देश में तथा एक साथ रहते हुए भी एक-दूसरे के प्रभाव से दूर हैं सहरिया जनजाति की दृष्टि से भारत विश्व में द्वितीय स्थान पर है तथा देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सहरिया जनजाति निवास करती हैं। इनमें गोंड सहरिया जनजाति देश की सबसे बड़ी जनजाति है।*

मुख्य शब्द – *दतिया रियासतए सामाजिक क्षेत्रए भारतीय संस्कृतिए प्राचीन सभ्यतायें*

----------X----------

प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप के आदिवासी एक समान प्रजाति के नहीं हैं। भारत कें एशिया की विभिन्न दिशाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों से प्रवेश करने वाले ये लोग प्रजातियों के भी हैं। अभी तक भारत की प्राचीन जनजातियों को निश्चित प्रजातीय समूहों में व्यवस्थित करना सम्भव नहीं हो सका है। रिज्ले, गुहा तथा मजूमदार समाज शास्त्रियों आदि के द्वारा प्रयास किए गए थे, किन्तु अब तक वे पूर्णतः विश्वासप्रद सिद्ध नहीं हुए हैं। इसलिये भारतीय आदिवासी जनसंख्या को एक निश्चित परिप्रेक्ष्य मंे प्रस्तुत किये जा सकने के लिए और अधिक मानवशास्त्रीय शोध आवश्यक है।

भारत में सबसे पहले सहरिया जनजाति समूहों की भूमिका को निश्चित करने के लिए हमें सर्वप्रथम पृष्ठभूमि के रूप में सिन्धु घाटी की सभ्यता के पतन तथा भारत भूमि पर आर्यों के आगमन का संक्षिप्त पुनर्निरीक्षण करना होगा। भारतभूमि पर सिन्धु घाटी की सभ्यता सम्भवतः एक प्रामाणिक क्रमिक उद्विकास की देन है किन्तु अप्रवासी विदेशियों द्वारा भारत में स्थापित उपनिवेश का अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य हो सकता है। ‘‘इस सभ्यता का ‘‘अचानक’’ उद्भव तथा लगभग विस्फोटक विकास (चढ़ाव) तथा उसकी स्वतः स्फूर्ति वृद्धि के अनेक कारण हो सकते हैं।’’2 इनमें से एक कारण सिन्धु घाटी की अनुकूल परिस्थितियाँ हो सकती हैं।

भूमि की अत्यन्त उर्वरा शक्ति के कारण जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। हो सकता है प्रारम्भ में, सिन्धु घाटी की सभ्यता की जनसंख्या एकसमान प्रजाति की रही हो, परन्तु वह वैसी बनी नहीं रह सकी क्योंकि श्मशान स्थलों से प्राप्त कंकाल एक मिश्रित प्रजातीय विन्यास प्रस्तुत करते हैं। उसके पतन तथा विलुप्त होने के कारणों को अभी भी निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। एक कारण सिन्धु नदी की धारा का विपत्तिकारक परिवर्तन हो सकता है जिसके फलस्वरूप घर विनाशकारी बाढ़ की चपेट में आ गये और खेतों में नदी की मिट्टी भर गई।

चूंकि कालानुक्रम संशोधित किया जा चुका है तथा इस सभ्यता का अन्त लगभग 1750 ईसापूर्व निश्चित किया गया है इसलिए, उस प्राचीन परिकल्पना को पुनः जीवित किया गया है कि आक्रमणकारी आर्यों (ऋग्वैदिक कालीन आर्यों के पूर्वगामी) ने हड़प्पा सभ्यता के केन्द्र को नष्ट कर दिया हो तथा उसकी जनसंख्या को मार डाला अथवा खदेड़ दिया हो। मोहनजोदड़ो में एक भवन की सीढ़ियों पर बिना दफनाये गए कंकालों की प्राप्ति स इस कल्पना को समर्थन प्राप्त होता है।

www.ignited.in

प्रजातीय अप्रवास प्रागैतिहासिक कालों के अन्तिम चरण में हुआ तथा जो भारत की संस्कृति तथा इतिहास के स्वरूप निर्धारण का सर्वाधिक गम्भीर कारण बना वह ईसा पूर्व द्वितीय सहस्त्राब्दी के लगभग आर्यों का था। भारत की सीमा पर आर्य सर्वप्रथम कब प्रकट हुये यह अभी भी ज्ञात नहीं है। आर्यों के प्रारम्भिक अप्रवासन तथा विजय का प्रागैतिहासिक प्रमाण अत्यंत सूक्ष्म है तथा कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के विश्वसनीय उत्तरों की अभी मांग है। क्या विजित लोग सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोग थे, क्या वे द्रविड़ भाषा बोलते थे इत्यादि प्रश्न इस सन्दर्भ में उठते हैं।

जाति व्यवस्था:-

ऐतिहासिक काल के प्रारम्भिक चरण मं आक्रमणकारियों तथा मुल साम्राज्य शक्तियों द्वारा छोटी जनजातीय टुकड़ियों को पराधीन बनाया गया। अजातशत्रु ने वैशाली जनजातीय गणतन्त्र को नष्ट कर दिया। सिकन्दर ने उत्तर पश्चिमी सीमा पर जनजातियों का सफाया कर दिया। अर्थशास्त्र में अतविक का सन्दर्भ आता है जिसे शक्तिशाली विरोधी माना जाता है। अशोक ने उत्तरी पश्चिमी सहरिया जनजाति को धमकी दी थी कि यदि उन्होंने विद्रोह किया तो उसके घातक परिणाम होंगे, जबकि उसने अपने राज्य की वन्य जनजातियों को अपनी शरण देने का आश्वासन दिया।

भारतीय जीवन में सहरिया जनजाति अन्तर्वस्तु की तुलना समुद्र में एक बर्फ के टुकड़े से भी की जा सकती है तथा इनकी पहचान आर्यों तथा द्रविड़ों के समान की जा सकती है। सजातीय व सांस्कृतिक दृष्टि से सहरिया जनजाति जन समूहों का प्रादुर्भाव तथा उसका प्रबल समाज में अन्तर्लयन एक ऐसी प्रक्रिया है जो आज तक चल रही है। इस कहानी के सूत्र को प्राचीन साहित्यिक ग्रन्थों, पुरातात्विक एवं पुरालेखीय साक्ष्यों, मध्यकालीन कार्यों, ब्रिटिश अभिलेखों एवं प्रलेखों के बीच से बड़ी सावधानीपूर्वक अध्ययन करना पड़ेगा।

सहरिया जनजाति समाज की निष्कर्षात्मक परिभाषा करना आसान नहीं है तथा इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का मानकीकरण प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। इसलिये सहरिया जनजाति की अवधारणा के क्षेत्रीय संस्कारों की दृष्टि में रखते हुये अन्तर्राष्ट्रीय अथवा विश्वव्यापी स्तर से हट जाना अधिक अच्छा होगा तथा अपनी समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत ही मानकीकरण प्रस्तुत करने की ओर ध्यान केन्द्रित करना ठीक होगा। ऐसा करना इस परिस्थिति में कदापि उचित लगता है क्योंकि विश्वव्यापी मानक वाली परिभाषायें या तो बहुत विस्तृत तथा खोखली हैं अथवा अत्यन्त संकीर्ण तथा सीमित हैं।

स्त्रियों की स्थिति:-

ब्रिटिश बुन्देलखण्ड के रूप में जाना जाने जनपद जालौन ब्रिटिश बुन्देलखण्ड के रूप में जाना वाला जनपद जालौन इलाहबाद व झांसी मंजुल के यमुना किनारे के उत्तरी भाग में अवस्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 99/357 एक या 1549 वर्ग मील है। इसमें रामपुरा गगम्मन पुर, गोपाल पुरा की जागीरदारी का 78.48 वर्गमील उत्तरी पश्चिमी कोण मे स्थित है। इस जनपद के पश्चिम में पहुॅच नदी सीमा रेखा बनाती है। इसके उत्तर में यमुना नदी बहती है। जो इटावा व कानपुर जनपद को अलग करती है। दक्षिण पूर्व में बेतवा नदी झांसी जिला व हमीरपुर जिला को विभाजित करती है। जिले के दक्षिण पूर्व में कदौरा बावनी एकमात्र मुस्लिम नबाबी रियासत है। सम्पूर्ण जिला सूखे के प्रति अत्याधिक अनिश्चयी व खतरनाक बन जाता है। सिंचाई बुबाई के समय कम वर्षा व कम पानी के कारण हाहाकार मच जाता है।

होमरूल आन्दोलन की आध्यात्मिक व्याख्या, असहयोग व सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में जनभागीदारी के नये-नये प्रयोग, गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों के खददरी द्वारा क्रियान्वयन की भावभूमि यहीं तैयार हुयी है। आजाद की शहादद में शर्मनाक भूमिका व मुखबिर को मारने का प्रयास भी यही किया गया था। कांग्रेस व उत्कर्ष व प्राइवेट कम्पनी में रूपान्तरण, जे.पी. आन्दोलन का जागरण घण्ट, भाजपा का हिन्दूवादी उत्थान व पतन, मुलायम सिंह का यादवी, काशीराम व मायावती के दायित्व राजनैतिक प्रयोग व राहुल गाँधी का मिशन 2012 का शुभारम्भ वर्ग यही हुआ था। यह जनपद सरक्षणवादी राजनीति, किसानों की यूनियन व निम्न वर्गीय चेतन का हलचलों का साक्षी उनकी पहल व उत्तेजना का केन्द्र भी रहा है।

शिक्षा व्यवस्था:-

दतिया की संवेढ़ा तहसील में नदी के तट पर सनत्कुमार, नारद और जमदग्नि प्रभृति ब्रह्मर्षियों के आश्रम रहे हैं। अतः अनुमान लगाया जा सकता है कि पौराणिक काल में सेंवढ़ा क्षेत्र में गुरूकुल और चरण जैसी शिक्षा संसथाऐं रही होंगी। सिंध नदी के तट पर, पहूज नदी के तट पर और दतिया की अन्य पुरानी बस्तियों में प्राचीन मठों के भग्नावेश हैं। अमरकोष के अनुसार 'मठों' के छात्र अथवा अन्ते-वासियों का 'निलय' (छात्रावास) रहता था। अतः निश्चित है कि 'गुरूकुल' भी इन मठों के समीप ही कहीं रहे होंगे।

ये मठ जैन, बौद्ध, कापालिक तथा शैव या शक्त सम्पद्रायों के है। इन सम्प्रदायों की धार्मिक शिक्षण की अपनी-अपनी पद्धति थी। अतएव यह कहने में कोई दोष नहीं कि दतिया जनपद में 'शिक्षा' की प्राचीन परम्परा है। और इसकी पुष्टि होती है ग्राम गुजरी में

www.ignited.in

स्थित मौर्य सम्राट अषोष के षिलालेख से जो कि दतिया जनपद के बीचे से गुजरने वाले 'सार्थवाहों' और यात्रियों के लिए खुदवाया गया था।

दतिया राज्य का शिक्षा-इतिहास 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध अर्थात् महाराजा भवानी सिंह के शासन काल से प्रारम्भ होता है। वह 1856-57 (विक्रम सं. 1914) में शासनारूढ़ हुए। पं. मुकुन्दलाल शास्त्री, हेड पण्डित, राजकुमार कॉलेज, नौगाँव, बुन्देलखण्ड द्वारा संग्रहीत एवं 1893 ई. में प्रकाशित "बुन्देलखण्ड प्रकाशिका" के अनुसार इनके शासनकाल में 1 अंग्रेजी स्कूल एवं 3 देहाती मदरसों की स्थापना हुई। दतिया नगर में सर्वप्रथम वर्ष 1858 में एक आधुनिक शिक्षा-पद्धति की पाठशाला स्थापित की गई, जो वर्ष 1862 में अंग्रेजी स्कूल कर दी गई थी, वही वर्ष 1888 में हाई स्कूल के रूप में परिवर्तित हो गया। सन् 1864 में, जिस समय कर्नल टामसन नौगाँव में पोलीटिकल एजेन्ट थे।

रीति रिवाज एवं परम्पराऐं:-

ब्राह्मण, मुस्लिम और ब्रिटिश काल में जाति प्रथा इतनी कठोर हो गई थी कि आनुवांशिक सदस्यता, अन्तर्विवाह, व्यावसायिक गतिशीलता से इन्कार, तथा सहभोजी और सामाजिक प्रतिबन्धों के माध्यम से सदस्यों को हमेशा एक निश्चित प्रस्थित का लाभ मिलता रहा। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दि के तीसरे दशक से आगे जाति प्रथा कठोर नहीं रह सकी क्योंकि औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार, कुछ वैधानिक उपायों का क्रियान्वयन और अनेक समाज सुधारकों के सामाजिक आन्दोलनों की प्रक्रियाऐं प्रारम्भ हो चुकी थीं।

एम.एन. श्रीनिवास ने 1952 में संस्कृतिकरण और नगरीकरण प्रक्रिया के माध्यम से जातियों में प्रस्थिति एवं परम्पराआं में गतिशीलता को समझाया है। उसका मानना था कि एक निम्न जाति शाकाहार बन कर और मद्यनिषेध अपना कर एक दो पीढ़ी में श्रेणी क्रम में उच्च स्थिति तक पहुंचने में समर्थ होती थी। दतिया जिले में ऐसी जातियां ब्राह्मणों के संस्कार, रीति रिवाज और विश्वास अपना लेती थीं और अपने अशुद्ध समझे जाने वाले संस्कारों को त्याग देती थीं।

प्रारम्भ में श्रीनिवास ने निम्न जातियों द्वारा ब्राह्मण जीवन शैली का अनुकरण करने की चेष्ठा करने की बात कही लेकिन बाद में उसने किसी उच्च वर्ण की महत्वपूर्ण जाति से अनुकरण की बात कही। लिंच ने इसे 'अभिजात्य अनुकरण' कहा है। बारनेट ने ब्राह्मणांे और क्षत्रियों के जीवन शैली की बराबरी करने को 'राजसी मॉडल' कहा है। इस प्रकार ऊध्वगामी गतिशील जाति ने संस्कृतिकरण या 'अभिजात अनुकरण' या 'राजसी अनुकरण' के माध्यम से अपनी प्रस्थिति में सुधार करने का प्रयत्न किया। परन्तु एम.एन. श्रीनिवास ने कहा है कि अस्पृश्य लोग कभी भी शूद्रों की सीमा रेखा पार नहीं कर सके हैं और न ही ऊँची जाति की प्रस्थिति प्राप्त कर सके हैं।

दतिया जिले की आदिवासी जातियों की विषिष्ट सामाजिक परम्परायें एवं रीति रिवाज:-

भारतीय संस्कृति की महानता एवं सर्वोच्चता उसकी प्राचीनता, स्थिरता और विविधता में निहित है। विश्व की अन्य किसी भी महान संस्कृति में ये तीनों खूबियां (तत्व) मौजूद नहीं हैं जहां रोम, सुमेरिया, फारस की प्राचीन सभ्यतायें अपना अस्तित्व खो चुकी हैं और आधुनिकता की बाढ़ में बह रही हैं। वहीं भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनता तथा प्राचीन सांस्कृतिक विशेषताओं का आधुनिकता की बाढ़ एवं तूफान में स्थिर एवं सुरक्षित बनाये हुए हैं।

भारतीय संस्कृति को विविधता का मिश्रण कहा जाता है, इसका कारण यहां विभिन्न धार्मिक, जातीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समूहों की मौजूदगी है। इन विभिन्न समूहों में से कोई न कोई प्राचीन सांस्कृतिक विशेषताओं को अपनाये हुए हैं। भारतीय संस्कृति के हार का सबसे सुन्दर फूल इसकी विविधता है बल्कि भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के साथ-साथ चली आ रही है। इस विविधता की सुरक्षा में देश की विशालता ने भरपूर सहयोग दिया।

दतिया जिले के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न जातीय एवं धार्मिक समूहों ने अपनी-अपनी संस्कृतियों को जन्म दिया तथा एक दूसरे के प्रभाव से अपने को बनाये रखा। विभिन्न सांस्कृतिक समूह एक देश में तथा एक साथ रहते हुए भी एक-दूसरे के प्रभाव से दूर हैं किन्तु फिर भी भारत माता के गले के सांस्कृतिक हार के एक-एक सुन्दर फूल है। जो विविध प्रकार की सांस्कृतिक खुशबू एवं रंगों से उनके मन को प्रसन्न एवं रूप को सुन्दर बना देते हैं। इन विविध फूलों में से ही एक ही, आदिवासी जनजाति सांस्कृतिक फूल जो सबसे अच्छा, स्वच्छ तथा सुन्दर है। आदिवासी जनजाति की दृष्टि से भारत विश्व में द्वितीय स्थान पर है तथा देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति निवास करती हैं। इनमें गांेड आदिवासी जनजाति देश की सबसे बड़ी जनजाति है।

मध्यप्रदेश में इसकी सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है। मध्यप्रदेश का वह भाग जो दतिया जिले के अन्तर्गत आता है, पश्चिमी मध्यप्रदेश कहलाता है। इस क्षेत्र में लगभग 41 प्रकार की अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा उनकी उपजातियां नामांकित की गई हैं, किन्तु जनजाति सर्वाधिक पायी जाती है। अतः उत्तरी मध्यप्रदेश को सहरिया वेल्ट के नाम से जाना जाता है। सहरिया तथा भील एवं गोंड जनजाति इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियां हैं।

निष्कर्ष

दतिया जिले के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न जातीय एवं धार्मिक समूहों ने अपनी-अपनी संस्कृतियों को जन्म दिया तथा एक दूसरे के प्रभाव से अपने को बनाये रखा। विभिन्न सांस्कृतिक समूह एक देश में तथा एक साथ रहते हुए भी एक-दूसरे के प्रभाव से दूर हैं जो विविध प्रकार की सांस्कृतिक खुशबू एवं रंगों से उनके मन को प्रसन्न एवं रूप को सुन्दर बना देते हैं। दतिया जिले के विकास के लिये नियोजित प्रयासों ने किसी अभूतपूर्व महानतर सामाजिक एवं क्षेत्रीय असमानतओं, खइयों और बहुत से असंतुलन पैदा कर दिये हैं। समाज के पर्ननिर्माण के लिये आवश्यक है सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक शक्ति की स्थापना हो। अतः जरूरी है सामाजिक, सांस्कृतिक शैक्षिक तथा आर्थिक उत्थान के लिये सरकार को कदम उठाने चाहिये। भारतीय संस्कृति को विविधता का मिश्रण कहा जाता है, इसका कारण यहां विभिन्न धार्मिक, जातीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समूहों की मौजूदगी है। इन विभिन्न समूहों में से कोई न कोई प्राचीन सांस्कृतिक विशेषताओं को अपनाये हुए हैं। भारतीय संस्कृति के हार का सबसे सुन्दर फूल इसकी विविधता है बल्कि भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के साथ-साथ चली आ रही है। इस विविधता की सुरक्षा में देश की विशालता ने भरपूर सहयोग दिया।

सन्दर्भ सूची

1- डॉ. चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ. एस.एम. जैन, यूनीफाइड भूगोल, बी.ए.- द्वितीय वर्ष, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, संस्करण 1997, पृ.-193।

2- डॉ. प्रमिला कुमार, म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 2003, पृ.1।

3- डॉ. सविन्द्र सिंह, भौतिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गौरखपुर-1998, पृ.-82-83।

4- डॉ. चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ. एस.एम. जैन, यूनीफाइड भूगोल, बी.ए.- द्वितीय वर्ष, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, संस्करण 1997, पृ.-69-70।

5- वही. पृ.-68-69।

6- सामान्य अध्ययन, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल-2004, पृ.-191।

Corresponding Author

Rajendra Kumar Khare*

Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

rajendrakhare08@gmail.com